सूख रही हैं दुनिया की नदियां

नरेन्द्र देवांगन

फिल्म निर्देशक रॉबर्ट रेडफोर्ड एक फिल्म बनाना चाहते थे 'ए रिवर रन्स थ्रू इट'। यह फिल्म मोन्टाना की ब्लैकफुट नदी के तट पर रहने वाले मछुआरों की ज़िंदगी पर आधारित एक उपन्यास से प्रेरित थी। जब रेडफोर्ड फिल्म की शूटिंग के लिए ब्लैकफुट नदी के तट पर गए, तो उन्हें न वहां नदी मिली और न उसके तट पर रहने वाले मछुआरे। नदी गंदा नाला बनकर रह गई थी। नदी जल के दुरुपयोग ने उसे प्रायः अस्तित्वहीन बना दिया था। अतः रेडफोर्ड को एक दूसरी नदी की तलाश करनी पड़ी।

यह अकेले ब्लैकफुट नदी का दुर्भाग्य नहीं है। संसार की कुछ महान और बारहमासी विशाल नदियां आज अपने गंतव्य अर्थात समुद्र तक पहुंच ही नहीं पातीं। उनका रुख बदल दिया गया है और उनके पानी का उपयोग सिंचाई, स्नानघरों के बाथ टबों और स्वीमिंग पूलों को भरने के लिए किया जा रहा है। कहीं उससे बिजली के टरबाइन चलाए जा रहे हैं और कहीं उद्योगों की मशीनों को ठंडा किया जा रहा है।

दुर्भाग्य से, जब योजनाकार नदी जल संसाधनों के उपयोग की योजना बनाते हैं तो वे जिस बात पर ध्यान नहीं देते, वह है स्वयं नदियों का अस्तित्व। परिणाम यह हुआ है कि उन्होंने पारिस्थितिकी, मछलियों, पक्षियों और वन्य जीवन के आवास को ही बदल दिया है। आज अमरीका में कुछ नदियां अपनी बाढ़ से नगर के नगर बहा ले जा रही हैं, वहीं दूसरी ओर, संसार की कई शानदार विशाल नदियां सूखती जा रही हैं। पहाड़ों में जन्मी, इठलाती, बल खाती, अल्हड़, पर्वतीय नदियां जल की क्षीणकाय धाराएं बन गई हैं।

संसार के जल संसाधनों को लेकर नीति बनाने वाले संगठन ग्लोबल वॉटर पॉलिसी प्रोजेक्ट के निदेशक के अनुसार, संसार की कुल खपत का दो तिहाई हिस्सा खेती में और एक चौथाई औद्योगिक उपयोग में लगता है। शेष नौ से दस प्रतिशत जल शहरों और कस्बों के काम आता है।

वर्ल्ड वॉच नामक पत्रिका में प्रकाशित *व्हेयर हैव ऑल द रिवर्स गॉन* (सारी नदिया कहां गईं) शीर्षक वाले लेख में कुछ संभावित संकट स्थलों की ओर संकेत किया गया है। एरिज़ोना में साल्ट और गिला नदियां फीनिक्स के पश्चिमी भाग में मिलती थीं। चूंकि अपने प्यासे खेतों के लिए लोगों ने उनके पानी का रुख मोड़ दिया, शहर का पूर्वी इलाका सूख-सा गया है। चीन में तो बीजिंग के निकट स्थित हेवन नदी बीस वर्ष पहले ही सूख गई थी। 'चीन का शोक' नाम से प्रसिद्ध पीली नदी तो अपने स्रोत में ही सूख जाती है। एक समय था, जब अपनी विनाशकारी बाढ़ों के कारण पीली नदी भूगोल की पुस्तकों में स्थान पाती थी। पश्चिम एशिया में जॉर्डन नदी के जल के अनियंत्रित उपयोग ने उसे एक पतली-सी धारा बना दिया है।

इसी तरह संसार में बड़े-बड़े बांधों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। संसार के बांधों में धरती का पंद्रह प्रतिशत जल जमा होता है, जिसे बार-बार उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा हज़ारों मीलों लंबी नहरें हैं जो पानी को मनचाहे स्थानों पर ले जाती हैं। 1960 में हरित क्रांति शुरू हुई थी तब से आज सिंचित क्षेत्र दुगना हो गया है। ग्लोबल वॉटर पॉलिसी प्रोजेक्ट के निदेशक का कहना है कि आगामी तीस-चालीस वर्षों में शहरों की ओर ज़्यादा से ज़्यादा जल प्रवाहित किया जाएगा। गांव शहरीकृत होते जा रहे हैं और आबादी में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। इससे एक और समस्या उत्पन्न होगी। शहरों में रहने वाले लोगों के लिए और ज़्यादा अन्न उपजाना पड़ेगा। पर हम यह अनाज उपजाएंगे कैसे?

एक समय था, जब मध्य एशिया में अरल सागर की गणना संसार के मीठे पानी से भरे बड़े सरोवरों में होती थी। इस सागर में गिरने वाली दो नदियों की मृतप्राय अवस्था के कारण यह सरोवर भी सूखता जा रहा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि मछलियों की चौबीस प्रजातियां नष्ट हो गई हैं और साठ हज़ार लोग बेरोज़गार। जिस सरोवर का जल

चाव से पिया जाता था, अब स्वास्थ्य के लिए विष बनता जा रहा है। टायफाइड तीस गुना बढ़ गया है और हेपेटाइटिस सात गुना। एक रूसी मछलीमार बंदरगाह में कैंसर भी कई गुना बढ़ गया है।

आज संसार की मरणासन्न नदियों को बचाने की दिशा में कुछ मौलिक योजनाओं की ज़रूरत है। पानी के बारे में अच्छी बात यह है कि उपयोग का यह अर्थ नहीं कि आपने उसे पूरी तरह हज़म कर लिया है। कुशल प्रबंधन किया जाए, तो आप उसका बार-बार उपयोग कर सकते हैं।

आज पश्चिमी अमरीका में जल-विक्रय के लिए एक मुक्त व्यापार प्रणाली विकसित हो रही है। इस प्रणाली के अंतर्गत जल-अधिकार को संपत्ति अधिकार की तरह समझा जाता है। उदाहरण के लिए एक किसान संघीय सरकार से अनुदान युक्त जल के लिए करार करता है। बाद में वह या तो सारा पानी या उसका कुछ हिस्सा किसी शहर को, किसी संगठन को या किसी साथी किसान को बेच सकता है। इस तरह वह जो लाभ कमाता है, उससे वह अपनी सिंचाई प्रणाली को और अच्छी बना सकता है ताकि उसे कम से कम पानी का उपयोग करना पड़े।

धरती की भांति नदियों का जीवन भी आबादी के बढ़ते दबाव पर निर्भर है। निरंतर बढ़ती आबादी, उसकी उदर पूर्ति के लिए उतना ही अधिक खाद्यान्न और अधिकाधिक खाद्यान्न उत्पादन के लिए जल का अधिकाधिक उपयोग, फिर निरंतर बढ़ती आबादी के लिए मकानों और मकानों में बड़े-बड़े लॉन, स्वीमिंग पूल, इन सबके लिए पानी। यह भयावह दृश्य सिहरा देता है। ***(स्रोत फीचर्स)***